JAGARLAMUDI KUPPUSWAMY CHOWDARY COLLEGE

GUNTUR - 522 006

(Autonomous)

Department of Hindi

II B.A., B.Sc., B.Com., & B.C.A. - Hindi Paper-III

III Semester Syllabus w.e.f. 2016-17

I) POETRY — काव्यदीप - संपादक - श्री. बि. राधाकृष्णमूर्ति

प्रकाशक - मारुति पब्लिकेषन्स

(COMMON CORE SYLLABUS)

LESSONS

1. साखी (1 to 10) - कबीरदास
2. बाल वर्णन - सूरदास
3. मातृभूमि - श्री मैथिलीशरण गुप्त
4. तोडती पत्थर - श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
5. गीत फरोश - श्री भवानी प्रसाद मिश्रा

II) PROSE — हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - लेखक - डा. गुलाबराय

(COMMON CORE SYLLABUS)

TOPICS

1. ज्ञानाश्रयी शाखा - कबीरदास
2. प्रेमाश्रयी शाखा - जायसी
3. राम भक्ति शाखा - तुलसीदास

III) GENERAL ESSAYS — साधारण निबंध

1. समाचार पत्र
2. बेकारी की समस्या
3. कंप्यूटर
4. पर्यावरण और प्रदूषण
5. साहित्य और समाज

IV) PRAYOJANMOOLAK HINDI

1. परिपत्र
2. ज्ञापन
3. अधिसूचना

V) TRANSLATION

1. अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद (English to Hindi)
   (निर्धारित परिच्छेदों में से - 1 to 6)

:: समाप्त ::

JAGARLAMUDI KUPPUSWAMY CHOWDARY COLLEGE

GUNTUR - 522 006

(Autonomous)

Department of Hindi

II B.A., B.Sc., B.Com., & B.C.A. - Hindi Paper-III

III Semester. Pattern of the Question Paper

Time : 3 Hrs. 2016-17 Max. Marks : 75

---

1. ANNOTATIONS 2×6 = 12
   (2 out of 4 from the prescribed Poetry Text Book - 'Kavya Deep')

2. SUMMARY OF THE POEM (From Modern Poetry only) 1×12 = 12
   (1 out of 2 Long answer type from Poetry Text Book - 'Kavya Deep')

3. INTRODUCTION OF POET (From Poetry part) 1×8 = 8
   (1 out of 2)

4. ESSAY TYPE QUESTIONS (From 'Hindi Sahitya ka Subodh Itihas') 1×15 = 15
   (1 out of 2)

5. GENERAL ESSAY 1×12 = 12
   (1 out of 3)

6. SHORT ANSWER QUESTIONS (From 'Prayojanmoolak Hindi') 1×6 = 6
   (1 out of 2)

7. TRANSLATION (English to Hindi) 1×10 = 10
   (From Prescribed English Paragraphs 1 to 6)

END

JAGARLAMUDI KUPPUSWAMY CHOWDARY COLLEGE

GUNTUR - 522 006

(Autonomous)

Department of Hindi

II B.A., B.Sc., B.Com., & B.C.A. - Hindi Paper-III

III Semester. Model Question Paper

Time : 3 Hrs. Paper Code : HIN 301C Max. Marks : 75

---

1. किन्ही दो पद्यांशों की संदर्भ सहित व्यख्या कीजिए । **2×6 = 12**

(A) पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहाड़ ।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार ।।

(अथवा) (OR)

किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत ।
मनिमय कनक नंद कै आँगन, बिम्ब पकरिबै धावत ।।
कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौ, कर सौं पकरन चाहत ।
किलकि हँसत राजत द्वै दंतियाँ, पुन-पुन तिहि अबगाहत ।।

(B) अभ्रंकश प्रसाद और ये महल हमारे,
बने हुए हैं अहो! तुझी से तुझ पर सारे ।
हे मातृभूमि! जब हम कभी शरण न तेरी पायेंगे,
बस तभी प्रलय के पेट में सभी लीन हो जायेंगे ।।

(अथवा) (OR)

जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ ।
मैं तरह-तरह के - गीत बेचता हूँ ।
मैं सभी किसिम के गीत - बेचता हूँ ।

2. किसी एक कविता का सारांश लिखिए । **1×12 = 12**

(A) तोडती पत्थर (B) गीत-फरोश

3. किसी एक कवि का सामान्य परिचय दीजिए । **1×8 = 8**

(A) कबीरदास (B) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए । **1×15 = 15**

(A) ज्ञानाश्रयी शाखा की विशेषताएँ बताते हुए उस शाखा के प्रमुख कवियों का परिचय दीजिए ।
(B) रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ बताते हुए तुलसीदास का परिचय दीजिए ।

5. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । **1×12 = 12**

(A) समाचार पत्र (B) कंप्यूटर (C) पर्यावरण और प्रदूषण

6. किसी एक प्रश्न का लघु उत्तर दीजिए । **1×6 = 6**

(A) परिपत्र का अर्थ लिखते हुए एक नमूने की परिपत्र को प्रस्तुत कीजिए ।
(B) ज्ञापन किसे कहते है ? कार्यालय ज्ञापन का एक नमूना लिखिए ।

7. हिन्दी में अनुवाद कीजिए । **1×10 = 10**

Ali Baba was a poor man. One day when he was cutting wood in the jungle, he found a cave in the rocks. It was closed by a strong door. He tried to open it. While he was doing this, a band of robbers comeup. Ali Baba did himself behind some bushes and watched. When the robbers chief came to the door, he said “open seasome!”. The door opened. The robbers went inside. Presently, they came out again and the leader said “shut seasome!” and the door closed.

:: समाप्त ::

JAGARLAMUDI KUPPUSWAMY CHOWDARY COLLEGE

GUNTUR - 522 006

(Autonomous)

Department of Hindi

II B.A., B.Sc., B.Com., & B.C.A. - Hindi Paper-III

TRANSLATION (English to Hindi) - अनुवाद (अंग्रेजी से हिन्दी)

III SEMESTER - निर्धारित परिच्छेद 1 to 6

---

1. Kalidas is known as the Shakespeare of India. His name has been immortalised in the history of Sanskrit Literature. He was at the head of the celebrated nine gems which adorned the court of Vikramaditya. The poems and dramas of Kalidas have elicited unreserved praise not only from Indian Scholars but even from European critics like Maxmullar. The age in which Kalidas flourished and the place where was born are matters of dispute. But true genius is independent of time and place and although the century of Kalidas is far remote, his fame is shining with undiminished grandeur even in our days.

कालिदास भारत वर्ष के शेक्स्पियर कहे जाते हैं । संस्कृत साहित्य के इतिहास में उनका नाम अमर हो गया हैं । विक्रमादित्य के दरबार को जो प्रसिद्ध नवरत्न शोभायमान कर रहे थे, उनमें कालिदास अग्रगण्य थे । भारतीय विद्वानों ने ही नही प्रत्युत यूरोप के मैक्समूलर प्रभृति समालोचकों ने भी मुक्तकंठ से कालिदास के काव्यों और नाटकों की प्रशंसा की । कालिदास किस युग में विद्यमान थे, उनका जन्म स्थान कहाँ था, ये विवादास्पद विषय हैं । किन्तु वास्तविक प्रतिभा को देश-काल की अपेक्षा नहीं रहती । यद्यपि कालिदास की शताब्दी को बीते बहुत दिन हो गये तथापि उनकी धवल कीर्ति आज भी देदीप्यमान है ।

2. Pratap Sinha became the Rana of Mewad after his father's death, but he had no capital and was without any means. His kindred and clans were dispirited by defeats after defeats, but they yet possessed their noble spirit. So he thought to recover Chittore. Then hostilities began between the Rana and Moghuls. Pratap was single handed, he had to oppose the combined efforts of the Empire. Therefore he had to flee rock to rock and feed his family with the fruits of his native hills and bring up his son Amar Sinha, in the midst of savage beats. In the face of these difficulties he was undaunted and dit not swerve from his firm resolution.

पिता की मौत के बाद प्रतापसिंह मेवाड़ के राणा बने । मगर न उनको राजधानी थी न विभव । हार पर हार खाकर उनके सगे संबंधी उत्साह रहित हो गये थे । फिर भी उनका आत्मतेज नहीं गया । उन्होंने चित्तौर का पुनरुद्धार करने की ठानी । राणा और मुगलों में युद्ध शुरु हुआ । राणा अकेले थे और उन्हें संपूर्ण मुगल साम्राज्य की सम्मिलित शक्तियों का सामना करना था । इसलिए उन्हें एक पहाड से दूसरे पर भागना पडता था । अपने परिवार को पहाडी फल खिला कर रखना पडता था और पुत्र अमरसिंह को जंगली पशुओं के बीच में रखकर पालना पडता था । इन कठिनाइयों के होते हुए भी अटल रहे और अपने दृढ संकल्प से जरा भी विचलित न हुए ।

3. Vidyasagar was a very generous and charitable man. From his earliest year he helped the poor and needy to the almost of his power. As a boy at school he often gave the little food to another boy who had none. If one of his fellows fell ill, little Sagar would go to his house, sit by his bed and nurse him. His name became a household word in Bengal. Rich and poor, high and low all loved him alike. No beggar ever asked him for relief in vain. He would never have a porter at his gate lest some poor man who wished to see him might be turned away.

विद्यासागर अत्यन्त ही उदार और दानी थी । अपने बचपन से ही दीन-दुखियों की सहायता करने में पीछे न हठा । जब आप पाठशाला के छात्र थे, तब आपके जलपान के लिए जो कुछ थोडी सामाग्री रहती थी उसमें से बहुधा कुछ न कुछ निकालकर ऐसी विद्यार्थी को दे देते थे, जिसके पास कुछ नही रहता था । जव सहपाठियों में से कोई बीमार पड़ जाता, तब बालक ईश्वर उसके घर जाता, खाट के पास बैठकर उसकी सेवा करता था । बंगाल के हर घर में उसका नाम फैल गया । क्या अमीर, क्या गरीब, क्या छोटे, क्या बडे सब उनके साथ एक सा प्रेम रखते थे । कोई भिक्षुक उनके पास याचना कर विफल नहीं हुआ। उन्होंने अपने फाटक पर कभी दरबान नहीं रखा । यह इसलिए कि कोई गरीब आदमी मिलना चाहे हो कभी निकाल न दिया जाय ।

4. Ali Baba was a poor man. One day when he was cutting wood in the jungle he found a cave in the rocks. It was closed by a strong door. He tried to open it. While he was doing this, a band of robbers comeup. Ali Baba hid himself behind some bushes and watched. When the robbers chief came to the door, he said 'open sea some!'. The door opened. The robbers went inside. Presently, they came out again and the leader said 'shut sea some!' and the door closed. When the robbers gone, Ali Baba came out of the hiding place and went to the door and uttered the same magic words which the robber chief has used. The door opened. Ali Baba went in and found the cave full of gold and silver jewels. Ali Baba filled the sack with the money, loaded it on his donkey and went home. He was now a rich man.

अलीबाबा एक गरीब आदमी था । एक दिन वह जंगल में लकडियाँ काट रहा था । तब उसने पत्थरों के बीच एक गुफा पर मजबूत दरवाजा देखा था । वह बन्द था । वह दरवाजा खोलने का प्रयत्न करने लगा । तभी डाकुओं का गिरोह वहाँ आ पहुँचा । अलीबाबा झाडियों के पीछे छिप गया और वहाँ से उन्हें देखने लगा । जब लुटेरों का सरदार दरवाजे के पास आया तब उसने कहा 'खुल जा ससेम' और दरवाजा खुल गया । लुटेरे गुफा के भीतर चले गये । शीघ्र ही वे फिर बाहर आए । तब सरदार ने कहा कि 'बन्द हो जा ससेम' - दरवाजा बन्द हो गया । जब लुटेरे वहाँ से चले गये तब अलीबाबा छिपे हुए स्थान से बाहर आया । वह गुफा के दरवाजे के पास गया । उसने उन्ही जादुई शब्दों का उच्चारण किया जिनका प्रयोग लुटेरों का सरदार किया था । दरवाजा खुल गया । अलीबाबा गुफा के भीतर गया । उसने देखा कि सोने, चाँदी रत्नों से गुफा भरी थी । अलीबाबा ने धन से अपना बोरा भरा । उसे गधे पर लाद कर घर ले गया । अब वह अमीर बन गया ।

5. I (Mahatma Gandhi) am a servent of India and I am trying to serve India. I serve the whold of mankind. I had known in my early life that the service of India was not against the service of mankind. As I advanced in year and it is hoped my intellect also developed. I have realised that my thinking was right. After about fifty years of Public Service I can say today that the service of country is no less than service of the world. This thinking of mine has become more stronger. This principle is very good. By acceptance of this principle the condition of the world can improve and the mutual jealousy among the different nations of the world can be ended.

मैं (महात्मागाँधी) हिन्दुस्तान का सेवक हूँ । मैं हिन्दुस्तान की सेवा करने का प्रयास कर रहा हूँ । मैं सम्पूर्ण मानव जाति की सेवा करने के विरुद्ध नही हैं । जैसे-जैसे मेरी आयु में वृद्धि होती गई वैसे-वैसे मेरी बुद्धि भी विकसित होती गई । मैं ने अनुभव किया कि मेरी विचार धारा ठीक थी । लगभग पचास वर्षों की जन-सेवा के बाद आज मैं कह सकता हूँ कि देश सेवा संसार की सेवा से किसी तरह कम नही हैं । मेरी यह धारणा और भी मजबूत हो गई हैं । मेर सिद्धान्त अच्छा हैं । इस सिद्धान्त को स्वीकार कर लेने से विश्व की स्थिति सुधर सकती है । विश्व के विभिन्न देशों के बीच व्याप्त पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष का अन्त को सकता है ।

6. Everyone is agreed that poorer people should get more money and more help than they do get and that they should get this help as soon as it can possibly be given. Some of the poor, say, “well share out the wealth now-there is plenty of it about”, but if we share out the wealth now, no one will be able to run a business and soon most people will have to jobs and no wages. Well, let the state run the business. The state can run the Post Office and build worship, why can not it run everything else? If could of course, the only problem is could the state run business better and pay higher wages than the people who are not running the business? Some people say it could, some people say it could not.

प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि गरीब लोगों को जितना धन और सहायता वस्तुतः मिलती है कि उससे कहीं ज्यादा उन्हें मिलनी चाहिए । यह सहायता जितनी जल्दी मिल सके वह उतना ही अच्छा है । कुछ गरीब लोगों का विचार है कि समाज के पास जो बहुत सी सम्पत्ति है उसका बाँटवारा सब लोगों में हो। किन्तु ऐसा करने से कोई भी व्यवसाय नहीं चल पायेगा । शीघ्र ही इससे अधिकांश लोग बेरोजगार हो जायेंगे। कुछ लोगों का कहना है कि सरकार द्वारा ही सभी व्यवसाय चलाये जायें । वे कहते हैं कि जब सरकार डाकघर चला सकती है तथा जंगी दहाज बना सकती है तो अन्य कार्यों को क्यों नहीं सम्भाल सकती? उत्तर में कहा जा सकता है कि सरकार निस्सन्देह यह सब कुछ कर सकती । प्रश्न है क्या सरकार सभी व्यवसायों को बेहतर ढ़ंग से चला सकती है और कर्मचारियों को पहले से अधिक वेतन दे सकती है। कुछ लोगों का कहना है कि वह ऐसा कर सकती है तथा अन्य लोगों का कहना है कि वह ऐसा नहीं कर सकती ।